अन्तरराष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धान्त :-
(The modern theory of international trade)
(For B.A. Part I Hons)

अन्तरराष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धान्त जिसे 'सामान्य संतुलन कहते हैं' के प्रतिपादन का श्रेय कार्ल मेन्जर, विकस्टीड, बाम बर्क, पेरेटो, कैसल, वालरस तथा सोम शुम्पीटर जैसे अर्थशास्त्रियों ने की है। सर्वप्रथम हेक्शेर ने यह विचार व्यक्त किया कि अन्तरराष्ट्रीय व्यापार का प्रधान कारण विभिन्न देशों में साधन संबंधी अन्तर है। आगे चलकर ओहलिन ने अपनी पुस्तक 'Inter regional and international trade' में अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में मूल्य के सामान्य सिद्धान्त का प्रयोग किया। इसलिए इसे Heeksher ohlin नाम से जाना जाता है।

ohlin के अनुसार अन्तरराष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त मूल्य के सामान्य सिद्धान्त का ही एक विशद रूप है। अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की मांग एवं पूर्ति और उनके मूल्य तथा उत्पत्ति के साधनों की मांग एवं पूर्ति तथा मूल्यों में अन्योन्याश्रित संबंध (Inter related) है अर्थात् एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है। उनके अनुसार अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त को ही अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में लागू किया जा सकता है। ohlin ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या निम्न मान्यताओं के ~~अनुसार~~ आधार पर किया है :—

(i) अध्ययन के लिए केवल दो क्षेत्रों को लेना चाहिए।

(ii) उत्पादन के साधनों के गुणात्मक अंतरों की उपेक्षा करनी चाहिए।

(iii) अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में उत्पादन के साधन गतिशील होते हैं। जबकि अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में अगतिशील होते हैं।

(iv) अन्य वस्तुएं पूर्णतया गतिशील होते हैं।

(v) केवल वस्तुओं के लेन देन का विचार किया जाता है अर्थात् निर्यात आयात या भुगतान करते हैं।

Ohlin के विचारानुसार श्रम-विभाजन के आधार पर व्यक्तियों की विशिष्टता में और दो क्षेत्रों के बीच विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन की विशिष्टता में समानता है। व्यक्तिगत श्रम-विभाजन के अन्तर्गत कोई व्यक्ति उसी काम को करता है जिसमें वो योग्य है तो समय एवं शक्ति का सदुपयोग होता है तथा व्यक्ति एवं समाज को अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों के बीच भी श्रम-विभाजन हो जाता है। विभिन्न क्षेत्र उसी के अनुसार उत्पादन करते हैं और दक्षता प्राप्त कर लेते हैं। किसी क्षेत्र में उपजाऊ भूमि की पूर्ति है, किसी क्षेत्र में पूँजी का आधिक्य और कहीं कुशल श्रमिकों की पूर्ति अधिक मात्रा में है। प्रत्येक क्षेत्र के लिए साधनों की उपलब्धता और अपनी क्षमता के अनुसार विभिन्न वस्तुओं में दक्षता प्राप्त करना अधिक लाभप्रद होगा। इसी अनुरूप में उत्पादन भी उच्च कोटि का होगा और साधनों का अपव्यय भी नहीं होगा।

Ohlin का विचार है कि जिसप्रकार व्यक्तियों के गुणों की भिन्नता के कारण किसी स्वाभाविक काम में विशिष्टता प्राप्त की जा सकती है उसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में भी विभिन्न गुणों और विशेषताओं के कारण विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त कर ली जाती है।

उपरोक्त कारणों से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है। Ohlin के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य कारण सदा यही होता है कि देश में उत्पादन करने की अपेक्षा मुद्रा द्वारा बाहर से वस्तुएँ सस्ती खरीदी जा सकती है। Immediate cause of international trade is always that goods can be bought cheaper from outside in terms of money than they can be produced at home - Ohlin.

Ohlin ने सिद्धान्त की व्याख्या निम्न उदाहरण के द्वारा किया है:- आस्ट्रेलिया में भूमि काफी मात्रा में पायी जाती है पर श्रम एवं पूँजी की कमी है जिस कारण

आस्ट्रेलिया में गेहूँ, ऊन तथा मांस आदि वस्तुएँ जिनके उत्पादन में भूमि की अधिक तथा पूँजी की कम आवश्यकता है, सस्ती होगी। दूसरी ओर इंग्लैण्ड में पूँजी अधिक मात्रा में पायी जाती है परन्तु अन्य साधनों की पूर्ति कम है। इसलिए इंगलैण्ड में वैसी वस्तुओं का उत्पादन सस्ता होगा जिसमें पूँजी की अधिक आवश्यकता है। इस प्रकार आस्ट्रेलिया और इंगलैण्ड भिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करेगा क्यों कि दोनों देशों में भिन्न प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन की सुविधा प्राप्त है। दोनों देश इन भिन्न वस्तुओं का आयात-निर्यात करेंगे और व्यापार की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। परन्तु इतने से यह निश्चय नहीं किया जा सकता है कि वस्तु विशेष का व्यापार होगा अथवा नहीं। इसके लिए दोनों में विक्रेता को अपने यहाँ उत्पादित वस्तु की कीमत तथा विदेशों में उत्पादित वस्तु की कीमत की तुलना करनी होगी। इसके लिए विनिमय दर पर ध्यान देना आवश्यक है।

यदि दो क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न मौद्रिक प्रणालियाँ प्रचलन में है तथा इन क्षेत्रों के बीच व्यापार करने के लिए दोनों क्षेत्रों की मुद्राओं की विनिमय दर को ध्यान में रखना होगा। इसकी स्पष्टता निम्न उदाहरण द्वारा होता है:—

साधन	'B' देश में मूल्य (डालर में)	A देश में मूल्य पौण्ड में	A देश में डालर में मूल्य-विनिमय ($1=£2)	'A' देश में डालर में मूल्य-विनिमय £1= $3
a	$1	£ 2	$ 0.40	$ 0.60
b	$1	£ 3	$ 0.60	$ 0.90
c	$1	£ 4	$ 0.80	$ 1.20
d	$1	£ 6	$ 1.20	$ 1.80
e	$1	£ 8	$ 1.60	$ 2.40

इस प्रकार ohlin के सिद्धान्त से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं:— (i) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य कारण है दो क्षेत्रों में वस्तुओं के मूल्यों में विभिन्नता।

(ii) उत्पादन साधनों के सापेक्ष अभाव के कारण मूल्यों में विभिन्नता हो जाती है।

(iii) विनिमय दर निर्धारित हो जाने पर तुलनात्मक अन्तर पूर्ण अन्तर में बदल जाता है और इसी पूर्ण अन्तर के आधार पर विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन पर विशेष ध्यान देना पड़ता है।

(iv) विनिमय दर एवं वस्तुओं का मूल्य निर्धारण पारस्परिक मांग द्वारा होता है।

Ohlin का सिद्धान्त पुराने सिद्धान्तों के अपेक्षा अधिक ठोस एवं तर्कसंगत है। Ohlin ने अपने सिद्धान्तों में उन विभिन्न पक्षों का भी अध्ययन किया है जिनके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित होती है।